

Social Psychology

Paper V

B.A. III (Hons.)

Merits and Demerits of Lab Experiment Method

प्रयोगशाला प्रयोग विधि के गुण एवं अवगुण

(... continued)

प्रयोगशाला प्रयोग-विधि के गुण (Merits of Lab Experiment Method)

1) नियंत्रण (Control) - समाज मनोविज्ञान की इस विधि में एक मौलिक गुण यह है की यहाँ प्रयोगात्मक अध्ययन पूर्ण नियंत्रित परिस्थिति में किया जाट है। प्रयोगकर्ता ऐसे चरों के प्रभाव को रोक देता है, जिनके प्रभाव को तात्कालिक अध्ययन विषय पर देखने का अभिप्राय नहीं होता है और केवल उस चर या चरों के प्रभाव को नहीं रोकता है जिनके प्रभाव की उस अध्ययन-विषय पर देखने का अभिप्राय होता है। पहले प्रकार के चरों को नियंत्रित चर और दूसरे चर या चरों को प्रयोगात्मक चर कहते हैं। यह गुण किसी दूसरी विधि में नहीं है।

2) परिचालन (Manipulation) - इस विधि में प्रयोगकर्ता अपनी इच्छा के अनुसार किसी स्वतंत्र चर को परिचालित करने में सफल होता है। अध्ययन परिस्थिति पूर्णतः नियंत्रित होती है। इस लिए प्रयोगकर्ता को किसी चर को परिचालित करने में सुविधा होती है। यह गुण किसी दूसरी विधि में पर्याप्त मात्रा में नहीं पाया जाता है।

3) यथार्थता या परिशुद्धता (Precision) - इस विधि में यथार्थता या परिशुद्धता का गुण भी उपलब्ध है। इसका अर्थ यह है की वातावरण के पूर्णतः नियंत्रित होने के कारण प्रयोगात्मक कार्य-विधि में अशुद्धि-विचलन (error-variance) कम होती है और अशुद्धता एवं निश्चितता अधिक होती है। यह गुण भी इतनी मात्रा में किसी दूसरी विधि में नहीं पाया जाता है।

4) पृथकीकरण (Isolation) -समाज मनोविज्ञान की प्रयोग-विधि में पृथकीकरण का गुण पाया जाता है। इसका अर्थ यह है की यहां प्रयोगकर्ता कई स्वतंत्र चरों में से किसी एक चर को अलग कर के उसके प्रभाव को अध्ययन विषय पर देख सकते हैं। Kerlinger, 1964 के अनुसार प्रयोगशाला प्रयोग का यह एक महत्वपूर्ण गुण है जो इसे एक श्रेष्ठ विधि बना देता है।

5) पुनरावृत्ति (Repetition) - इस विधि में पूर्ण नियंत्रण होने के कारण प्रयोगात्मक अध्ययन को बार-बार दोहराना संभव होता है। प्रयोगकर्ता बार-बार उसी तरह की प्रयोगात्मक परिस्थितियों को उत्पन्न कर अपने प्रयोग

को दोहराता है और परिणामों की स्थिरता (stability) की जांच करा है। दूसरी विधियों में नियंत्रण के आभाव अथवा आंशिक नियंत्रण होने के कारण पुनरावृत्ति कठिन हो जाती है।

6) प्रमाणीकरण (Verification) - इस विधि में कठोर नियंत्रण होने के कारण एक प्रयोगकर्ता द्वारा प्राप्त परिणामों की जांच दूसरे प्रयोगकर्ता द्वारा संभव होती है। प्रमाणीकरण की इतनी अधिक सम्भावना किसी दूसरी विधि में नहीं है।

7) विश्वसनीयता (Reliability) - प्रयोगशाला-विधि की विश्वसनीयता दूसरी विधियों की अपेक्षा अधिक है। कारण, इस विधि में पूर्ण नियंत्रण संभव होता है, जबकि दूसरी विधियों में या तो नियंत्रण संभव नहीं होता है या केवल आंशिक नियंत्रण रहता है।

8) उच्च आंतरिक वैद्यता (High Internal Validity) - Sears, 1991 के अनुसार प्रयोगशाला-प्रयोग में उच्च आंतरिक वैद्यता का गुण पाया जाता है। कारण, यहां आश्रित चर के रूप में जिन प्रभावों का अध्ययन किया जाता है, वे वस्तुतः प्रयोगकर्ता द्वारा परिचालित करके के परिणाम होते हैं।

प्रयोगशाला प्रयोग-विधि के दोष (Demerits of Lab Experiment Method)-

1) कृत्रिमता (Artificiality) - इस विधि में कठोर नियंत्रण होने के कारण परिस्थिति कृत्रिम (artificial) तथा अस्वाभाविक (unnatural) बन जाती है। ऐसी परिस्थिति में अध्ययन कर के प्राप्त होने वाले परिणाम संदिग्ध (doubtful) हो जाते हैं।

2) लचीलापन का अभाव (Lack of Flexibility) - इस प्रयोग विधि में यथार्थता अधिक होने के कारण लचीलापन का अभाव हो जाता है। प्रयोगकर्ता के लिए यह संभव नहीं होता है कि वह आवश्यकता अनुसार अपनी कार्यविधि में परिवर्तन लाये।

3) वास्तविकता का अभाव (Lack of Realism) - इस प्रयोग विधि में कठोर नियंत्रण होने के कारण अध्ययन परिस्थिति अस्वाभाविक तथा कृत्रिम बन जाती है। दूसरे शब्दों में अध्ययन परिस्थिति की वास्तविकता घट जाती है।

4) सीमित क्षेत्र (Limited Scope) - इस प्रयोग-विधि का क्षेत्र बहुत सीमित है। इसके द्वारा सभी सामाजिक समस्याओं के अध्ययन संभव नहीं है। क्योंकि सभी सामाजिक परिस्थितियों पर पूरा नियंत्रण हासिल करना संभव नहीं है।

5) जटिल सामाजिक समस्याओं के लिए अनुपयुक्त (Inappropriate for Complex Social Problems) - समाज मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से इस विधि का एक गंभीर दोष यह है की इसके द्वारा जटिल सामाजिक समस्याओं का अध्ययन संभव नहीं है। Kerlinger, 2002 ने कहा है की समूहों की गतिकी (dynamics) तथा जटिल पारस्परिक क्रिया, आदि समस्याओं के अध्ययन में प्रयोगशाला प्रयोग-विधि सफल नहीं है।

6) प्रयोगकर्ता - पक्षपात (Experimenter Bias) - इस विधि से प्राप्त परिणामों पर प्रयोगकर्ता के व्यक्तिगत पक्षपातों का प्रभाव पड़ सकता है।

7) प्रयोज्य - पक्षपात (Subject Bias) - प्रयोगात्मक विधि के परिणामों पर प्रयोज्य-पक्षपातों का भी प्रभाव पड़ता है। प्रयोज्य यह जानता है की वह प्रयोग या शोध का एक अंग है। इस लिए वह जान-बूझ के सही प्रतिक्रिया या वांछित प्रतिक्रिया प्रकट करने का प्रयास करता है।

(...to be continued)

Dr. Hena Hussain

Asst. Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com